Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

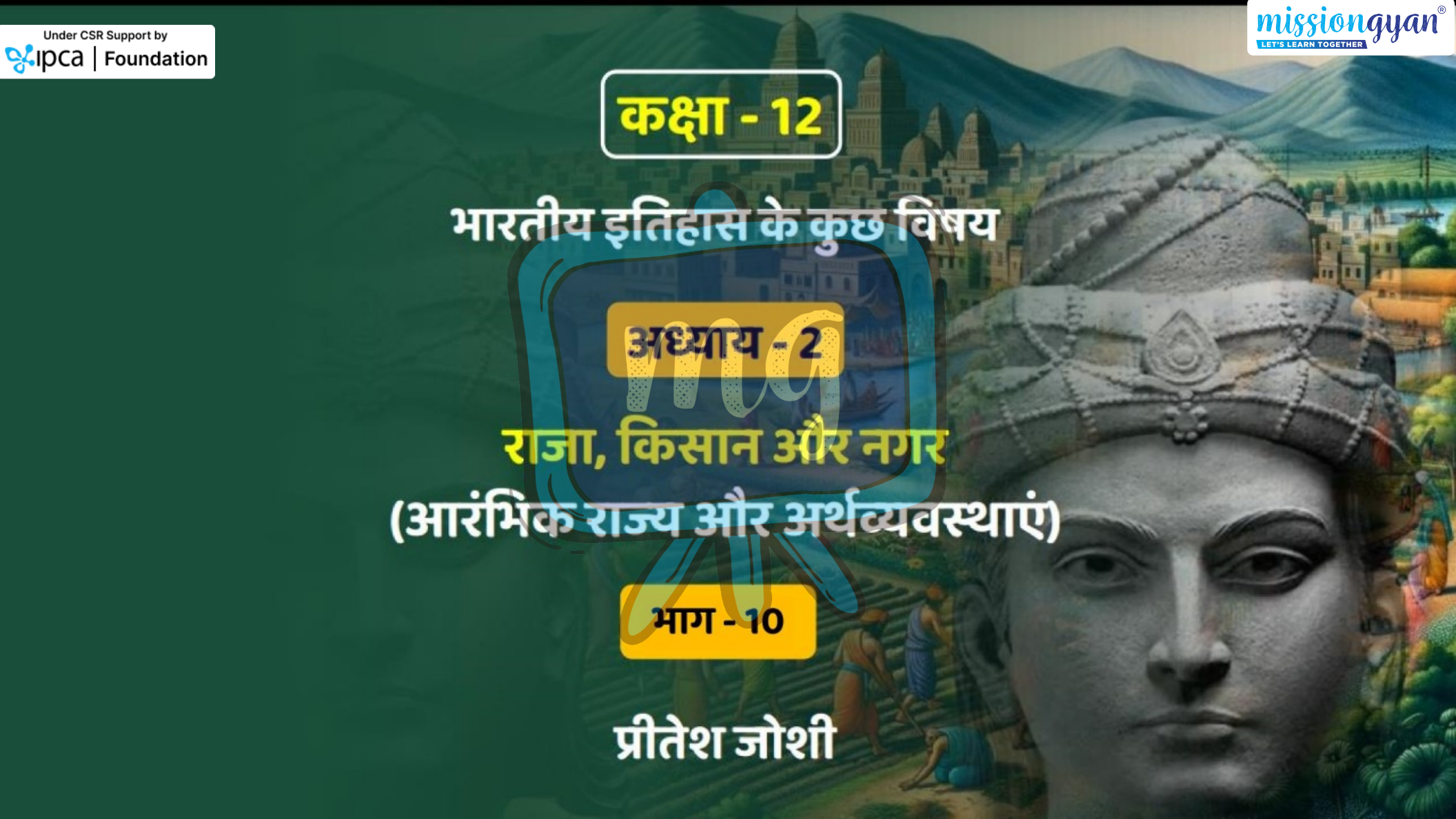

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 2

राजा, किसान और नगर

(आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएं)

भाग - 10

प्रीतेश जोशी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

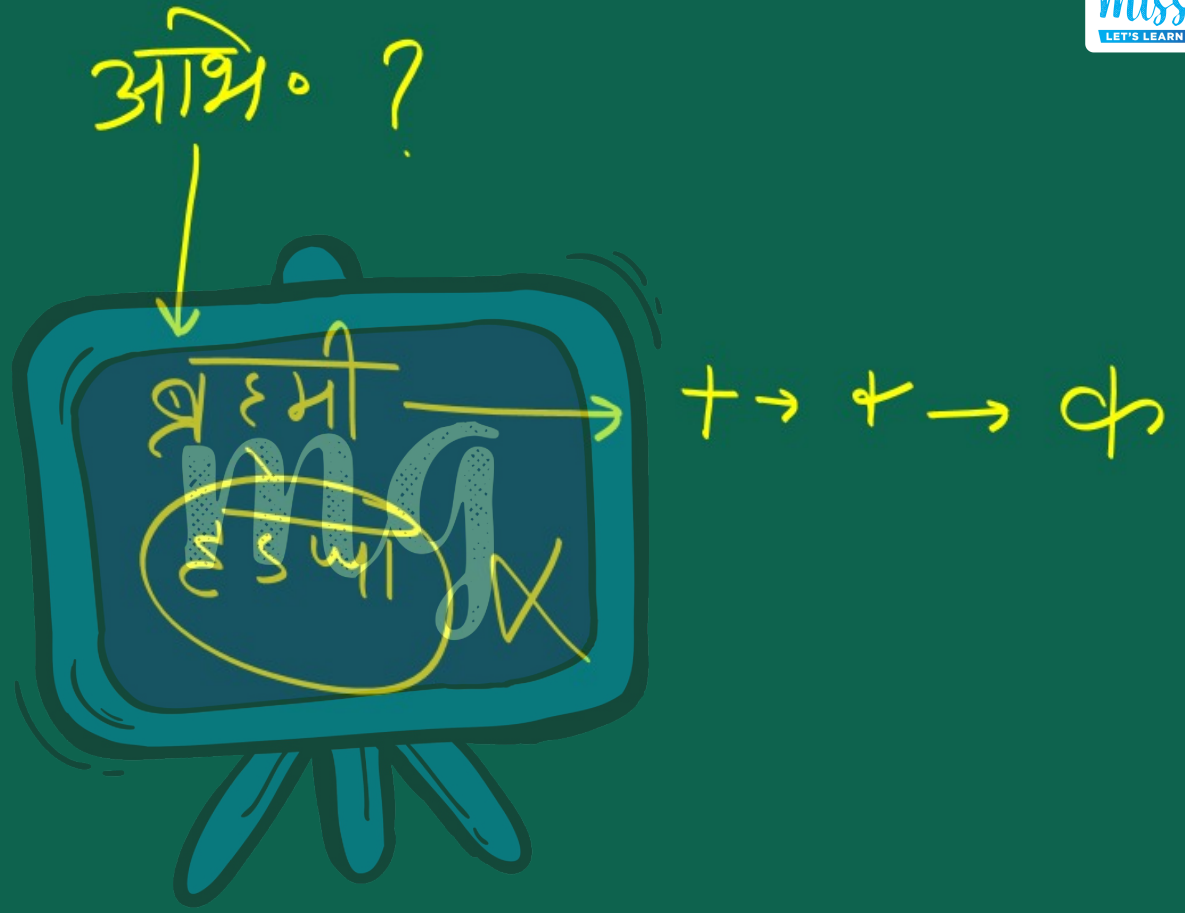

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



अभिलेखों का अर्थ कैसे निकाला जाता है?

ब्राह्मी लिपि द्वारा खरोष्ठी लिपि का अध्ययन कर अभिलेखों का अर्थ निकाला गया।

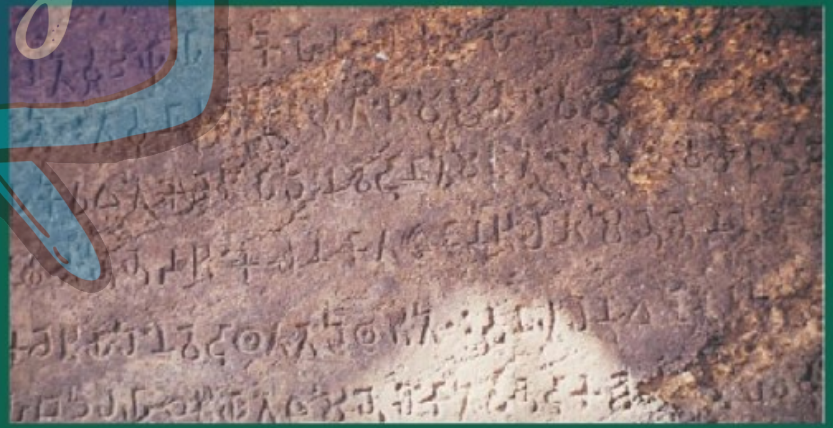

असोक का एक अभिलेख

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

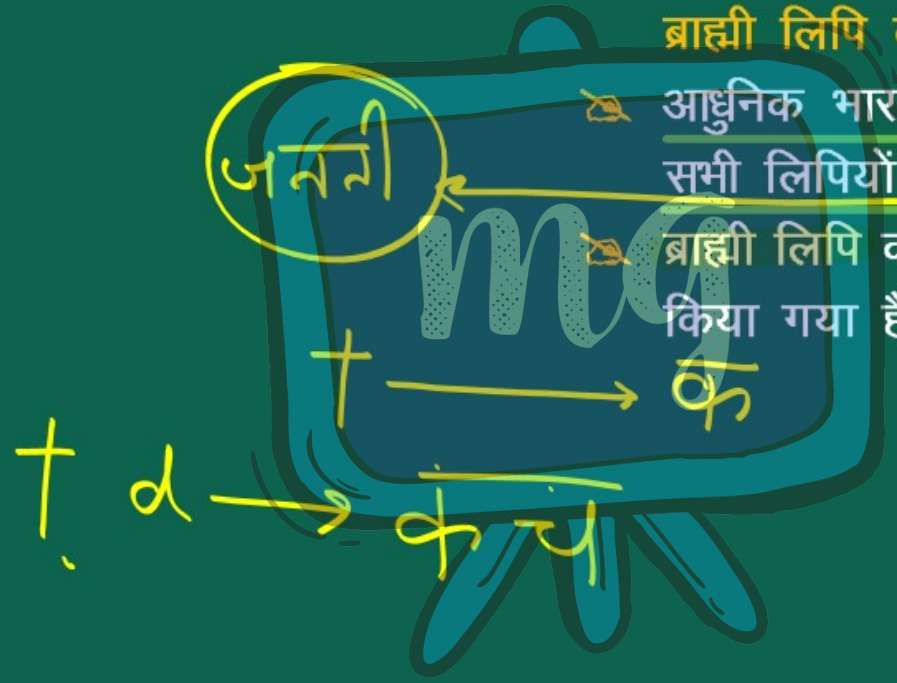

ब्राह्मी लिपि का अध्ययन –

- आधुनिक भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त लगभग सभी लिपियों का मूल ब्राह्मी लिपि है।
- ब्राह्मी लिपि का प्रयोग असोक के अभिलेखों में किया गया है।

जनती

t → क

t d → क च

t	क
d	च
८	ढ
९	द
४	म
!	र

ब्राह्मी और उसके समानार्थी देवनागरी अक्षर

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

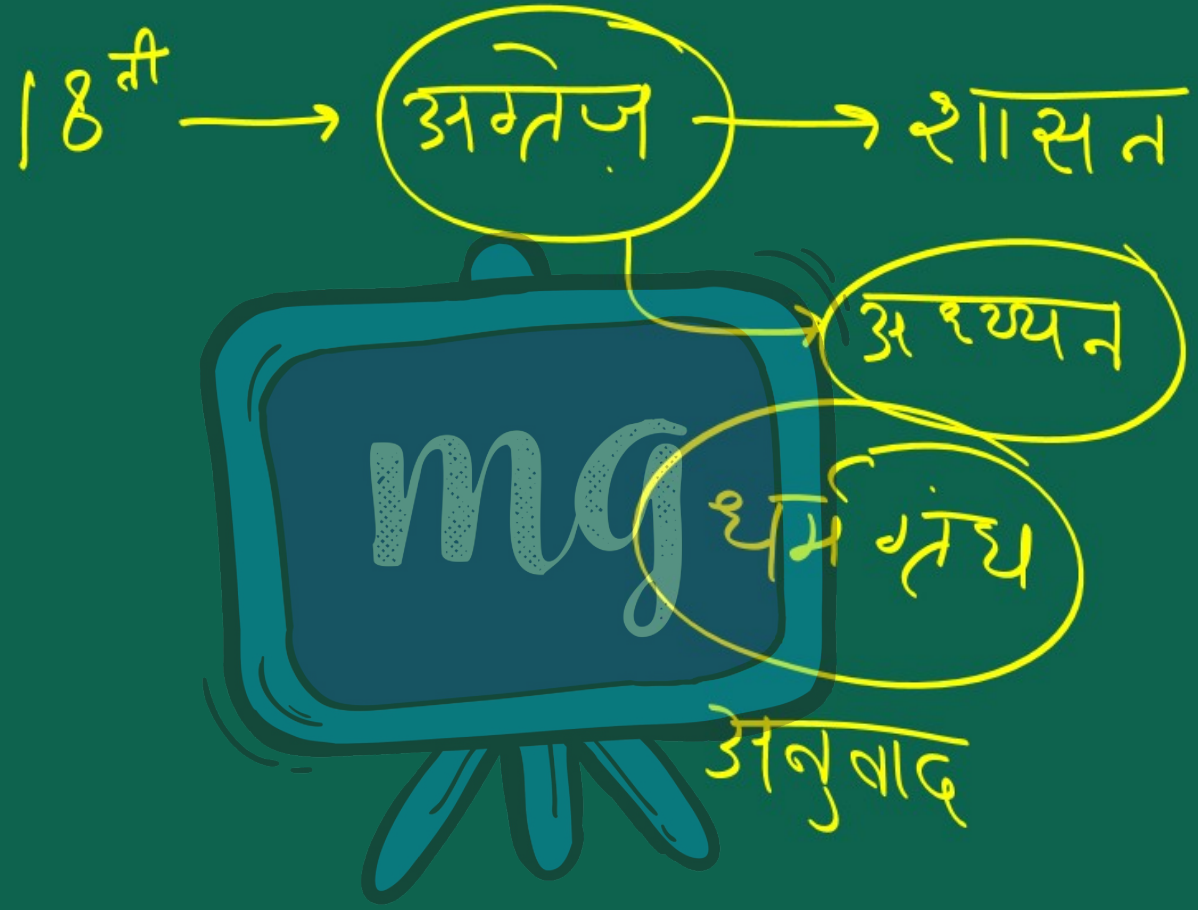

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



विलियम जोन्स → ASB



जेम्स



- 18वीं सदी से यूरोपीय विद्वानों ने भारतीय पंडितों की सहायता से आधुनिक बंगाली और देवनागरी लिपि में कई पांडुलिपियों का अध्ययन शुरू किया और उनके अक्षरों की प्राचीन अक्षरों के नमूनों से तुलना शुरू की।
- आरंभिक अभिलेखों का अध्ययन से विद्वानों को कई बार लगा कि ये संस्कृत में लिखे हैं जबकि प्राचीनतम अभिलेख वस्तुतः प्राकृत में थे।
- कई दशकों बाद जेम्स प्रिंसेप ने असोककालीन ब्राह्मी लिपि का 1838 ई. में अर्थ निकाल लिया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

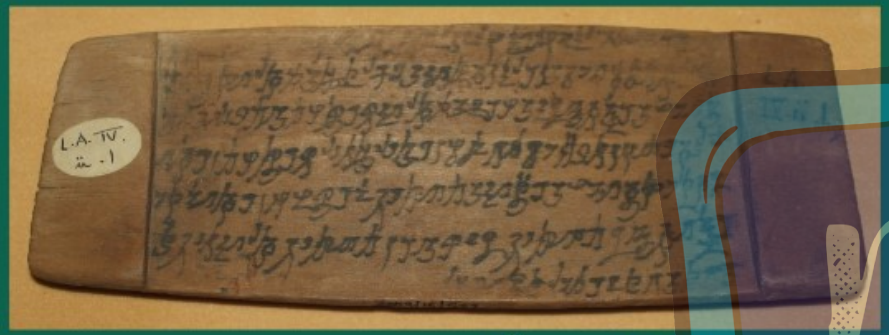

Q. जेम्स प्रिंसेप कौन थे? इतिहास लेखन में उनका क्या योगदान रहा?

Q.

खरोष्ठी लिपि को कैसे पढ़ा गया?

- पश्चिमोत्तर के अभिलेखों में प्रयुक्त खरोष्ठी लिपि के पढ़े जाने की कहानी अलग है।
- इस क्षेत्र में शासन करने वाले हिंद–यूनानी राजाओं द्वारा बनवाए गए सिक्कों से जानकारी हासिल करने में आसानी हुई है।



हिन्द यूनानी शासक मेनाण्डर का एक सिक्का

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

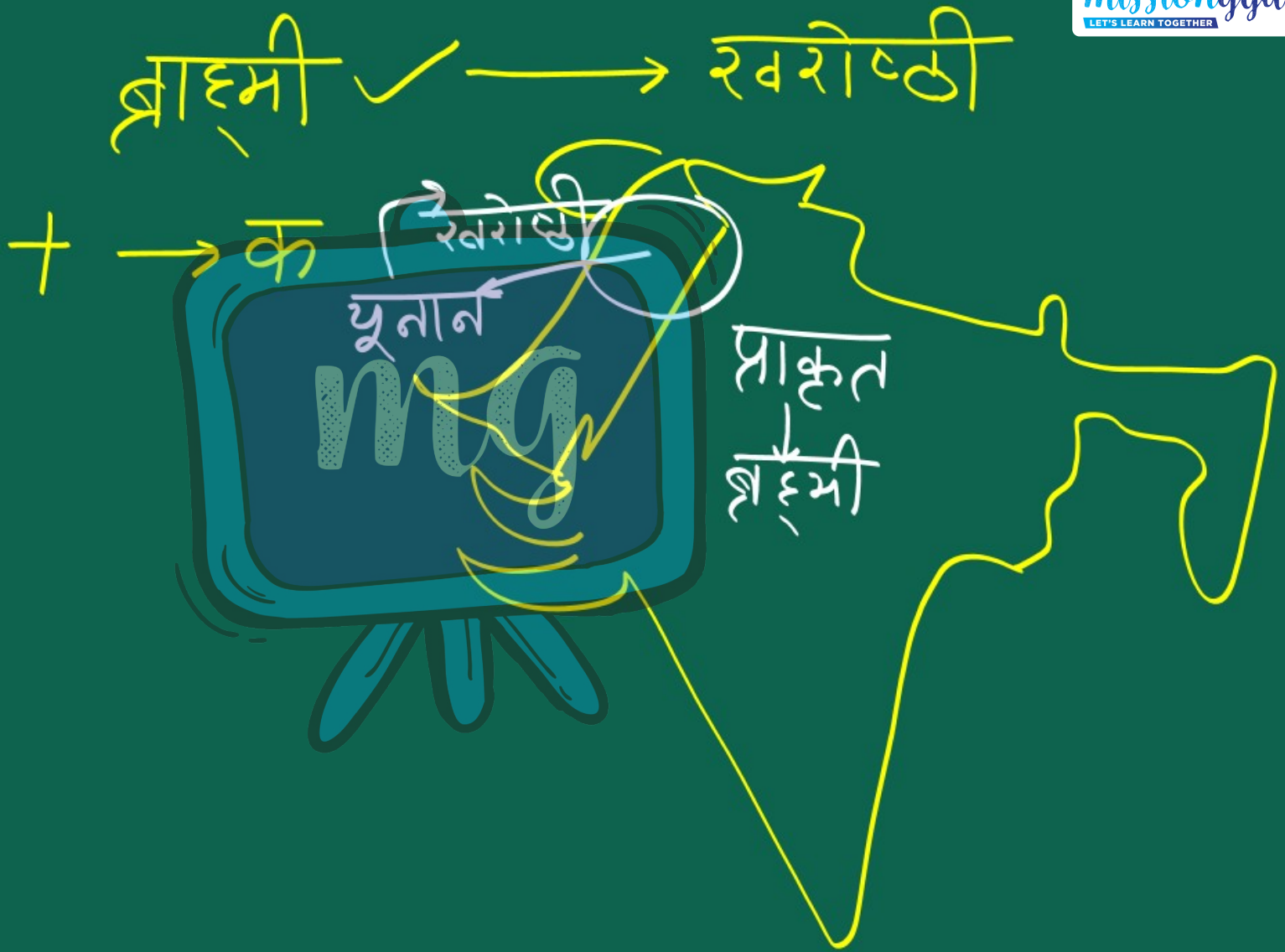

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- इन सिक्कों में राजाओं के नाम यूनानी और खरोष्ठी में लिखे गए हैं। यूनानी भाषा पढ़ने वाले यूरोपीय विद्वानों ने अक्षरों का मेल किया। जैसे – अपोलोडोटस के अक्षर 'अ' का मेल किया ।
- प्रिंसेप ने खरोष्ठी में लिखे अभिलेखों की भाषा की पहचान प्राकृत भाषा के रूप में की थी इसलिए लंबे अभिलेखों को पढ़ना सरल हो गया।

अभिलेखों से प्राप्त ऐतिहासिक साक्ष्य:

इतिहासकारों के काम करने के तरीकों का पता लगाने के लिए आइये अशोक के दो अभिलेखों को ध्यान से पढ़े।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



राजा के आदेश

राजन् देवानांपिय पियदस्सी यह कहते हैं: अतीत में मसलों को निपटाने और नियमित रूप से सूचना एकत्र करने की व्यवस्थाएँ नहीं थीं। लेकिन मैंने निम्नलिखित (व्यवस्था) की हैं।

लोगों के समाचार हम तक प्रतिवेदक सदैव पहुँचाएँ। चाहे मैं कहीं भी हूँ खाना खा रहा हूँ अन्तःपुर में हूँ, विश्राम कक्ष में हूँ, गोशाले में हूँ या फिर पालकी में मुझे ले जाया जा रहा हो अथवा वाटिका में हूँ। मैं लोगों के विषयों का निराकरण हर स्थल पर करूँगा।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

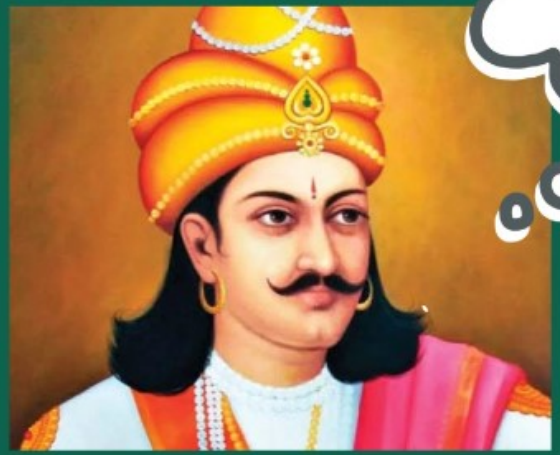

- इस अभिलेख में असोक का नाम नहीं लिखा है।
- इसमें असोक द्वारा अपनाई गई उपाधियों का प्रयोग किया गया है जैसे कि देवानांपिय अर्थात् देवताओं का प्रिय और 'पियदस्सी' यानी 'देखने में सुन्दर'।
- असोक नाम अन्य अभिलेखों में मिलता है जिसमें उनकी उपाधियाँ भी लिखी हैं।
- इन अभिलेखों का परीक्षण करने के बाद अभिलेखशास्त्रियों ने पता लगाया कि उनके विषय, शैली, भाषा और पुरालिपिविज्ञान सबमें समानता है, अतः ये अभिलेख एक ही शासक ने बनवाया होंगे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- असोक ने अपने अभिलेखों में कहा है कि उनसे पहले के शासकों ने रिपोर्ट एकत्र करने की व्यवस्था नहीं की थी।
- क्या यह असोक का वक्तव्य सही है? इसके लिए इतिहासकारों को बार-बार अभिलेखों के कथनों का परीक्षण करना पड़ता है।
- कुछ शब्द ब्रैकेट में लिखे हैं? अभिलेख शास्त्री प्रायः वाक्यों के अर्थ स्पष्ट करने के लिए ऐसा करते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

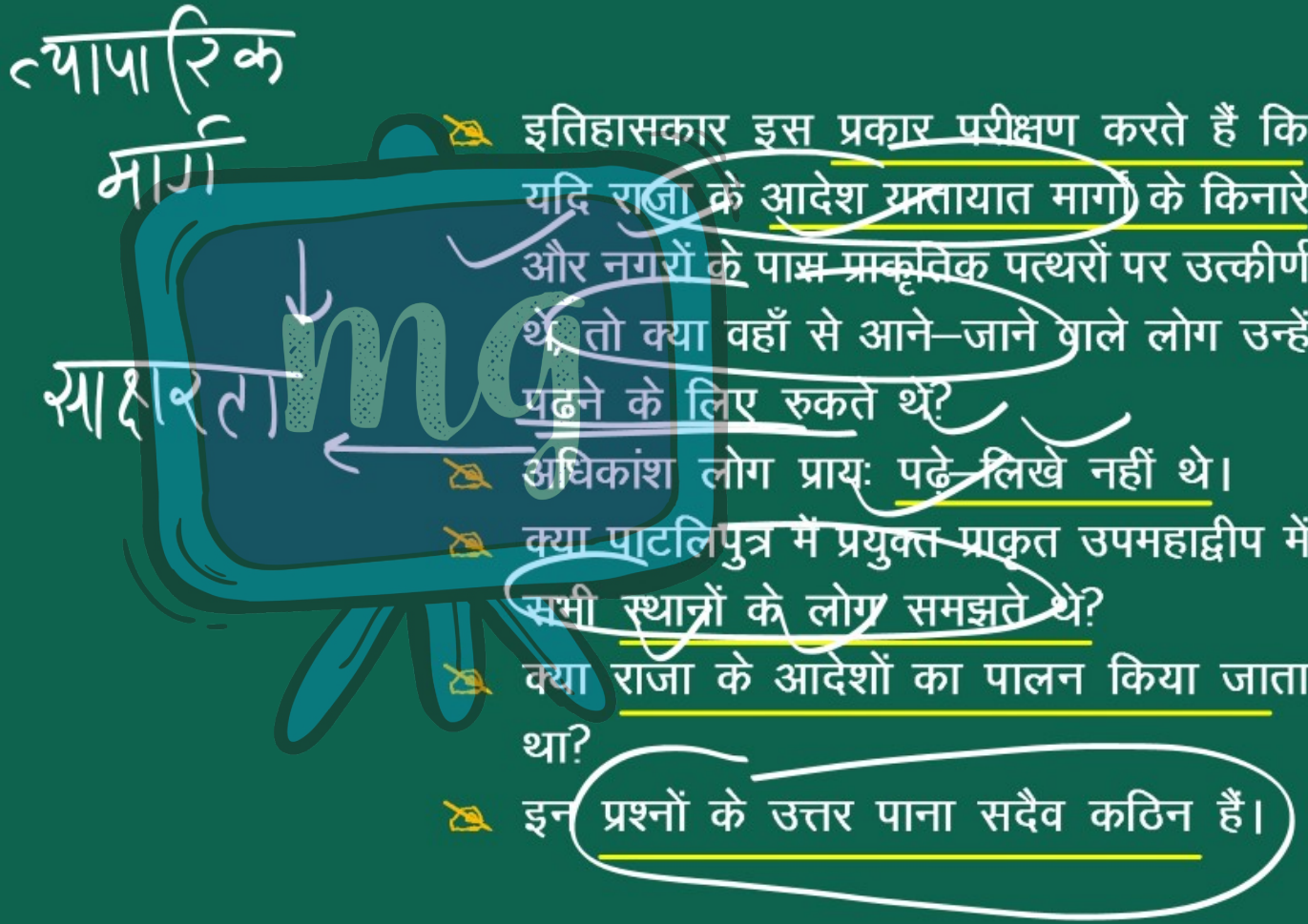

- इतिहासकार इस प्रकार परीक्षण करते हैं कि यदि राजा के आदेश यातायात मार्गों के किनारे और नगरों के पास प्राकृतिक पत्थरों पर उत्कीर्ण थे, तो क्या वहाँ से आने–जाने वाले लोग उन्हें पढ़ने के लिए रुकते थे?
- अधिकांश लोग प्रायः पढ़े-लिखे नहीं थे।
- क्या पाटलिपुत्र में प्रयुक्त प्राकृत उपमहाद्वीप में सभी स्थानों के लोग समझते थे?
- क्या राजा के आदेशों का पालन किया जाता था?
- इन प्रश्नों के उत्तर पाना सदैव कठिन हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

26

राजा की वेदना



जब देवानांपिय पियदस्सी ने अपने शासन के आठ वर्ष पूरे किए तो उन्होंने कलिंग (आधुनिक तटवर्ती उड़ीसा) पर विजय प्राप्त की।

डेढ़ लाख पुरुषों को निष्कासित किया गया, एक लाख मारे गए और इससे भी ज्यादा की मृत्यु हुई।

कलिंग पर शासन स्थापित करने के बाद देवानांपिय धम्म के गहन अध्ययन, धम्म के स्नेह और धम्म के उपदेश में डूब गए हैं।

यही देवानांपिय के लिए कलिंग की विजय का पश्चाताप है।

देवानांपिय के लिए यह बहुत वेदनादायी और निंदनीय है कि जब कोई किसी राज्य पर विजय प्राप्त करता है तो पराजित राज्य का हनन होता है, वहाँ लोग मारे जाते हैं, निष्कासित किए जाते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

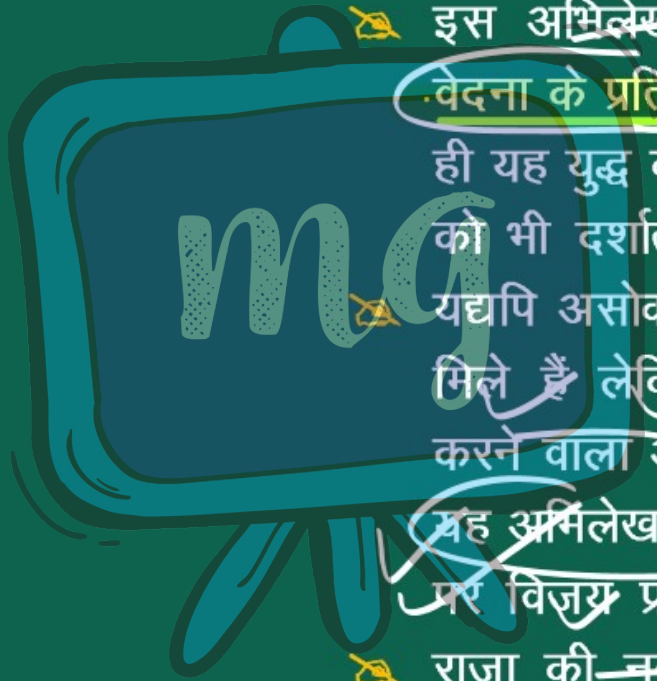

- इस अभिलेख की व्याख्या प्रायः असोक की वेदना के प्रतिबिंब के रूप में की जाती है। साथ ही यह युद्ध के प्रति उनकी मनोवृत्ति में परिवर्तन को भी दर्शाता है।
- यद्यपि असोक के अभिलेख आधुनिक उड़ीसा में मिले हैं लेकिन उनकी वेदना को परिलक्षित करने वाला अभिलेख वहाँ नहीं मिला है अर्थात् यह अभिलेख उस क्षेत्र में नहीं उपलब्ध है जिस पर विजय प्राप्त की गई थी।
- राजा की नव विजय की वेदना उस क्षेत्र के लिए इतनी दर्दनाक थी कि राजा इस मुद्दे पर कुछ कह न सका।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

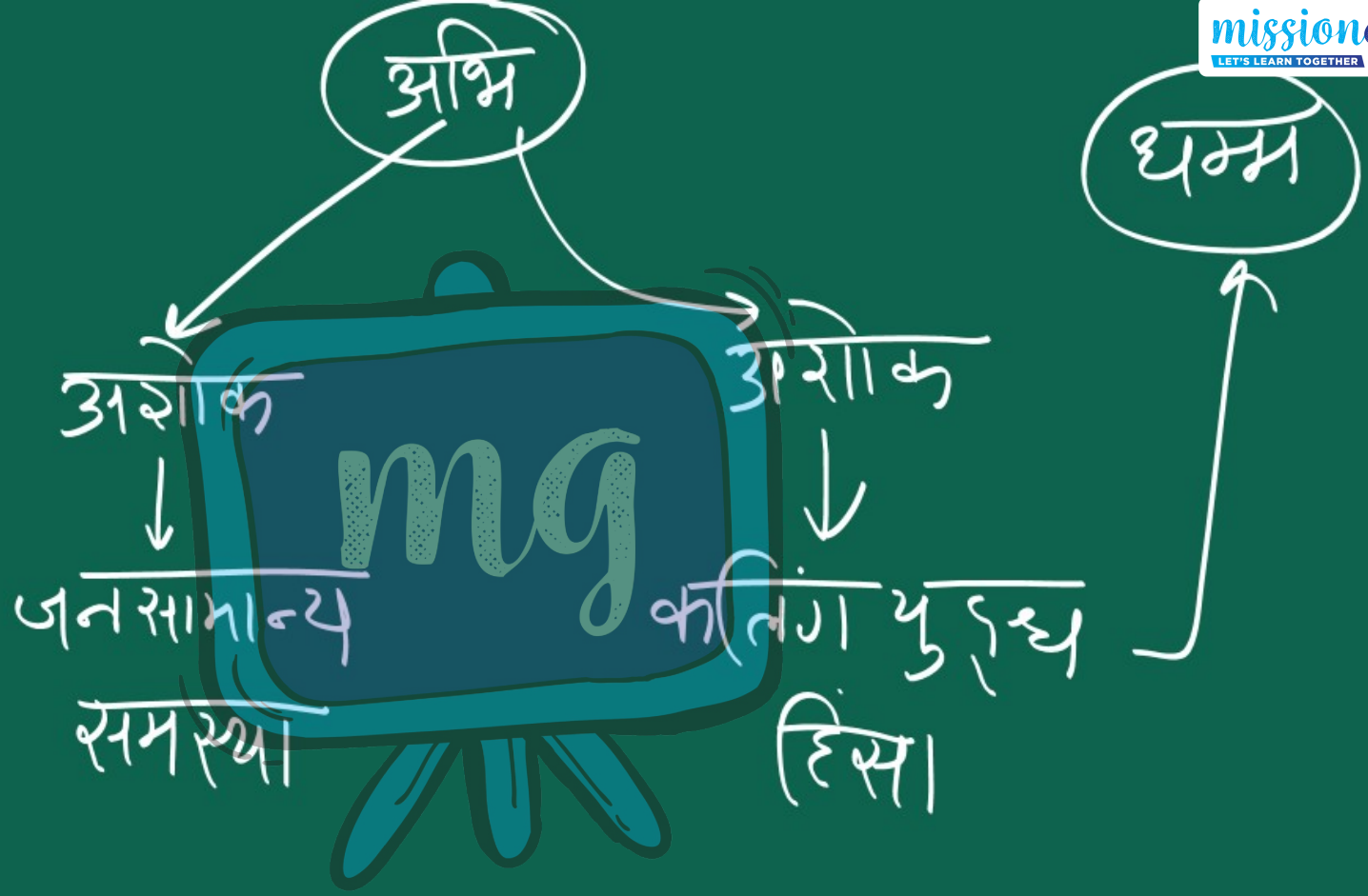

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

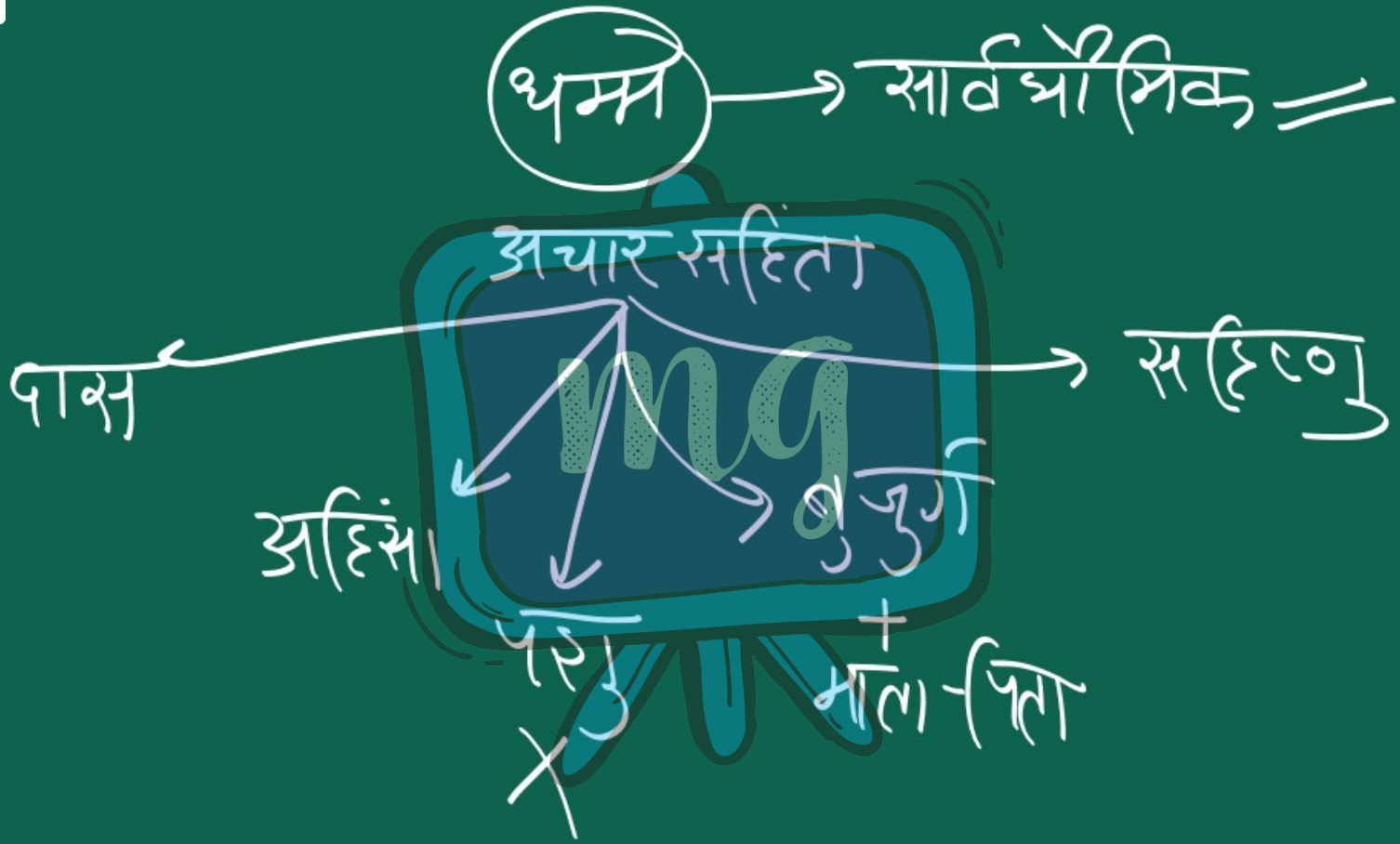

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

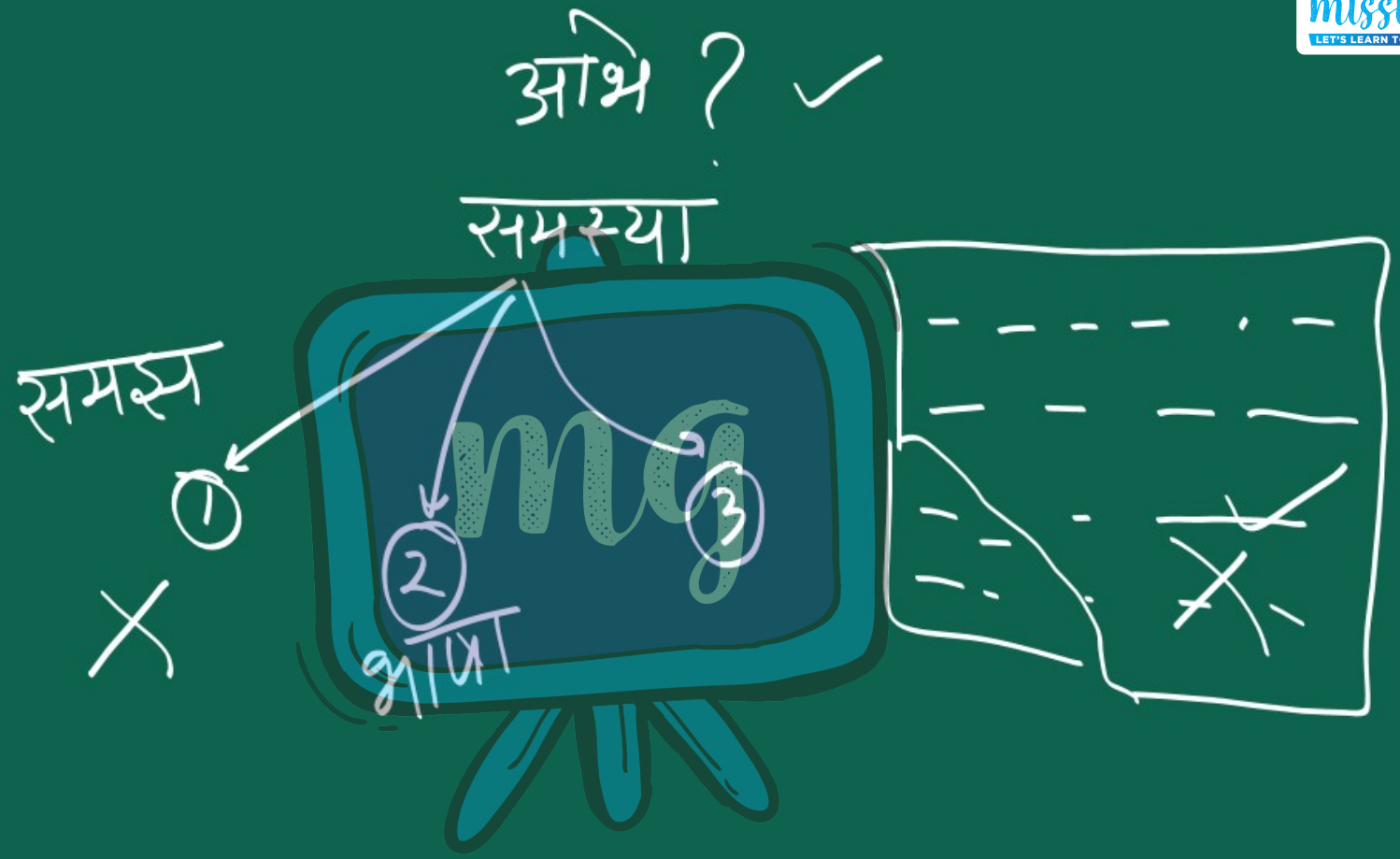

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अभिलेख साक्ष्य की सीमा



- अभिलेखों से प्राप्त जानकारी की भी सीमा होती है।
- कभी–कभी इसकी तकनीकी सीमा होती है। अक्षरों को हलके ढंग से उत्कीर्ण किया जाता है जिन्हें पढ़ पाना मुश्किल होता है।
- अभिलेख नष्ट भी हो सकते हैं जिनसे अक्षर लुप्त हो जाते हैं।
- अभिलेखों के शब्दों के वास्तविक अर्थ के बारे में पूर्ण रूप से ज्ञान हो पाना सदैव सरल नहीं होता क्योंकि कुछ अर्थ किसी विशेष स्थान या समय से संबंधित होते हैं।

- अक्षरों को हलके ढंग से उत्कीर्ण
- नष्ट ⟶ लुप्त
- अर्थ की अस्पष्टता

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- अभिलेखों के अंश
- विशेष अवसरों
- राजनीतिक - सामाजिक इतिहास का अभाव

- यद्यपि कई हजार अभिलेख प्राप्त हुए हैं लेकिन सभी के अर्थ नहीं निकाले जा सके है।
- इसके अतिरिक्त और अनेक अभिलेख रहे होंगे जो कालांतर में सुरक्षित नहीं बचे हैं। इसलिए जो अभिलेख अभी उपलब्ध हैं, वह संभवतः कुल अभिलेखों के अंश मात्र हैं।
- एक मौलिक समस्या और भी है यह अभिलेख बड़े और विशेष अवसरों का ही उल्लेख करते हैं। यह जरूरी नहीं है कि जिन्हें हम आज राजनीतिक और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण मानते हैं उन्हें अभिलेखों में अंकित किया गया हो।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

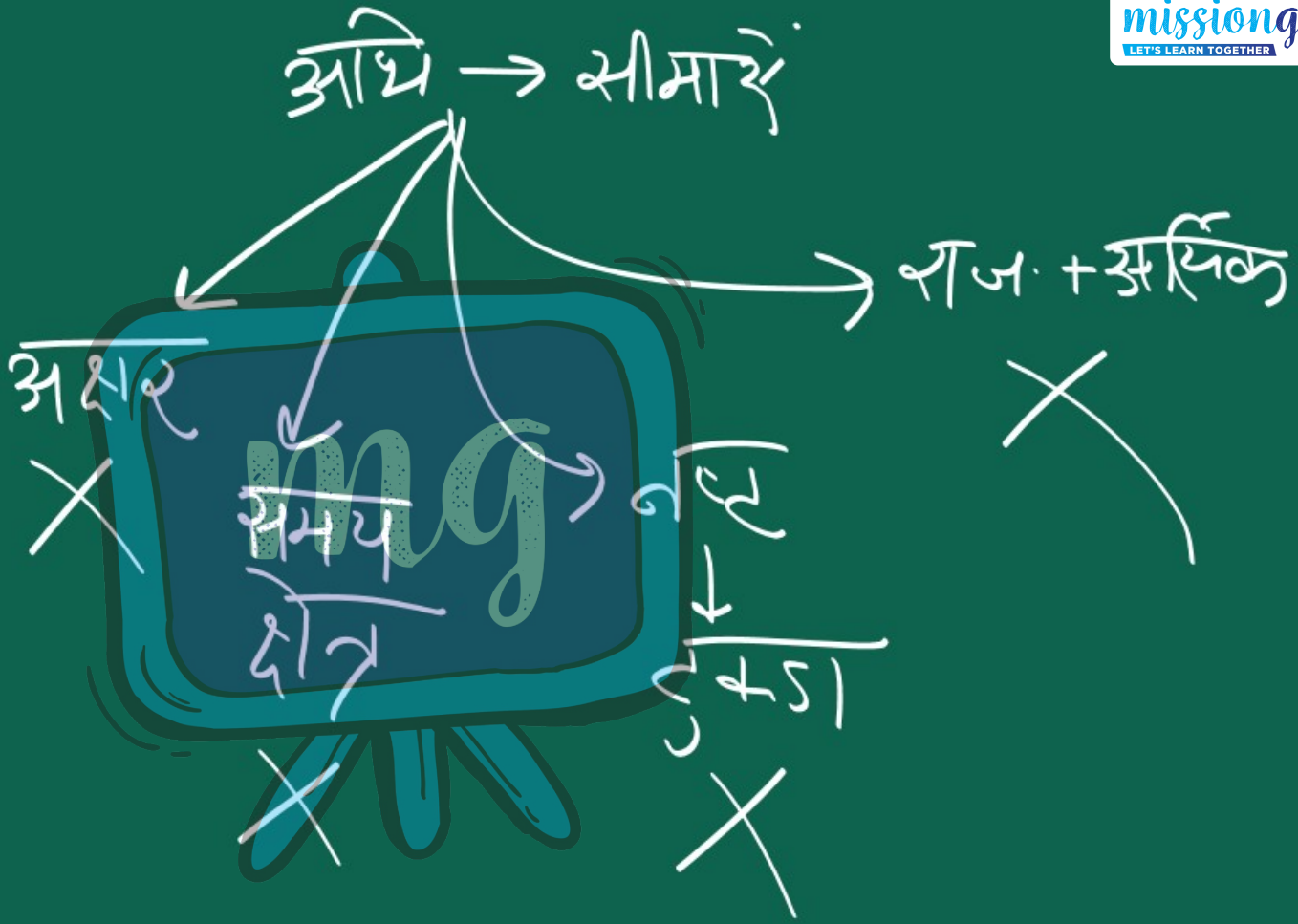

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

राजा ↔ अमीर





19वीं 20वीं

कला संस्कृति

समाज, राज, अभिजात, सामान्य

उदाहरण के तौर पर – खेती की दैनिक प्रक्रियाएं और रोजमर्रा की जिन्दगी के सुख दुख का उल्लेख अभिलेखों में नहीं है।

- इसके अलावा अभिलेख हमेशा उन्हीं व्यक्तियों के विचार व्यक्त करते हैं जो उन्हें बनवाते थे।
- अर्थात् राजनीतिक और आर्थिक इतिहास का पूर्ण ज्ञान मात्र अभिलेख शास्त्र से ही नहीं मिलता है।
- 19वीं सदी के आखिरी दशकों में और 20वीं सदी के प्रारंभ में इतिहासकार प्रमुख रूप से राजाओं के इतिहास में रुचि रखते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

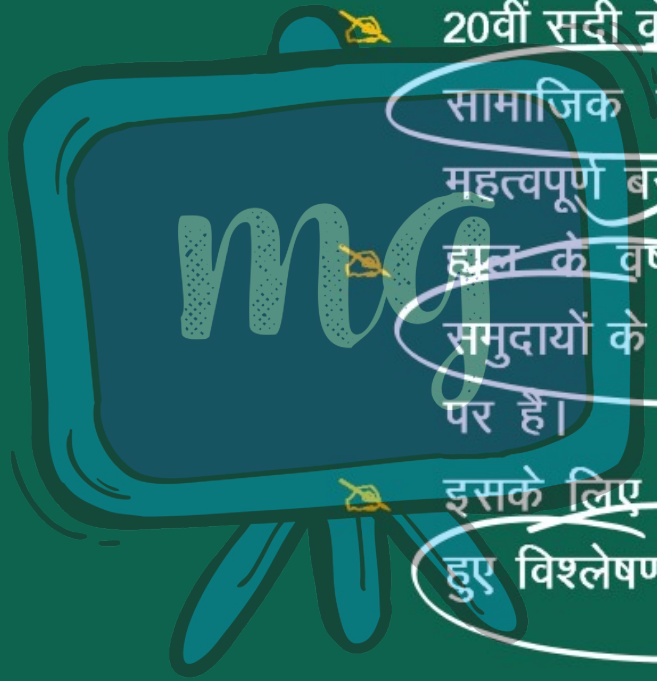

- 20वीं सदी के मध्य से आर्थिक परिवर्तन, विभिन्न सामाजिक समुदायों के उदय के विषय में महत्वपूर्ण बन गए।
- हाल के वर्षों में इतिहासकारों की रुचि ऐसे समुदायों के प्रति बढ़ी है जो सामाजिक हाशिये पर है।
- इसके लिए प्राचीन स्त्रोतों पर पुर्नविचार करते हुए विश्लेषण की गयी विधियां विकसित होंगी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



काल रेखा

अभिलेखशास्त्र के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति

अट्ठारहवीं शताब्दी

1784	बंगाल एशियाटिक सोसायटी का गठन

उन्नीसवीं शताब्दी

1810 का दशक	कोलिन मैकेंजी ने संस्कृत और तमिल भाषा के 8000 अभिलेख एकत्र किए
1838	जेम्स प्रिंसेप द्वारा असोक के ब्राह्मी अभिलेखों का अर्थ लगाना
1877	अलेक्जैंडर कनिंघम ने असोक, के अभिलेखों के एक अंश को प्रकाशित किया।

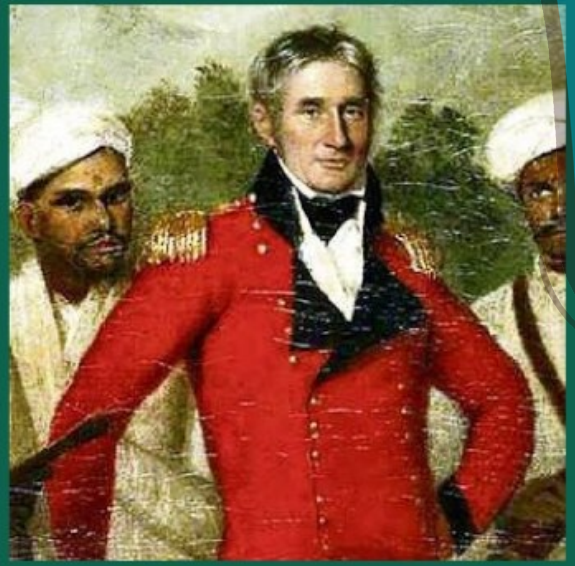

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



दक्षिण भारत के अभिलेखों के शोधपत्र एपिग्राफिओ कर्नाटिका का प्रथम अंक

एपिग्राफिया इंडिका का प्रथम अंक

डी.सी. सरकार ने इंडियन एपिग्राफी एंड इंडियन एपिग्राफिकल ग्लोसरी प्रकाशित की।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1. आरंभिक ऐतिहासिक नगरों में शिल्प कला के उत्पादन के प्रमाणों की चर्चा कीजिए। हड़प्पा के नगरों के प्रमाण से ये प्रमाण कितने भिन्न हैं ?

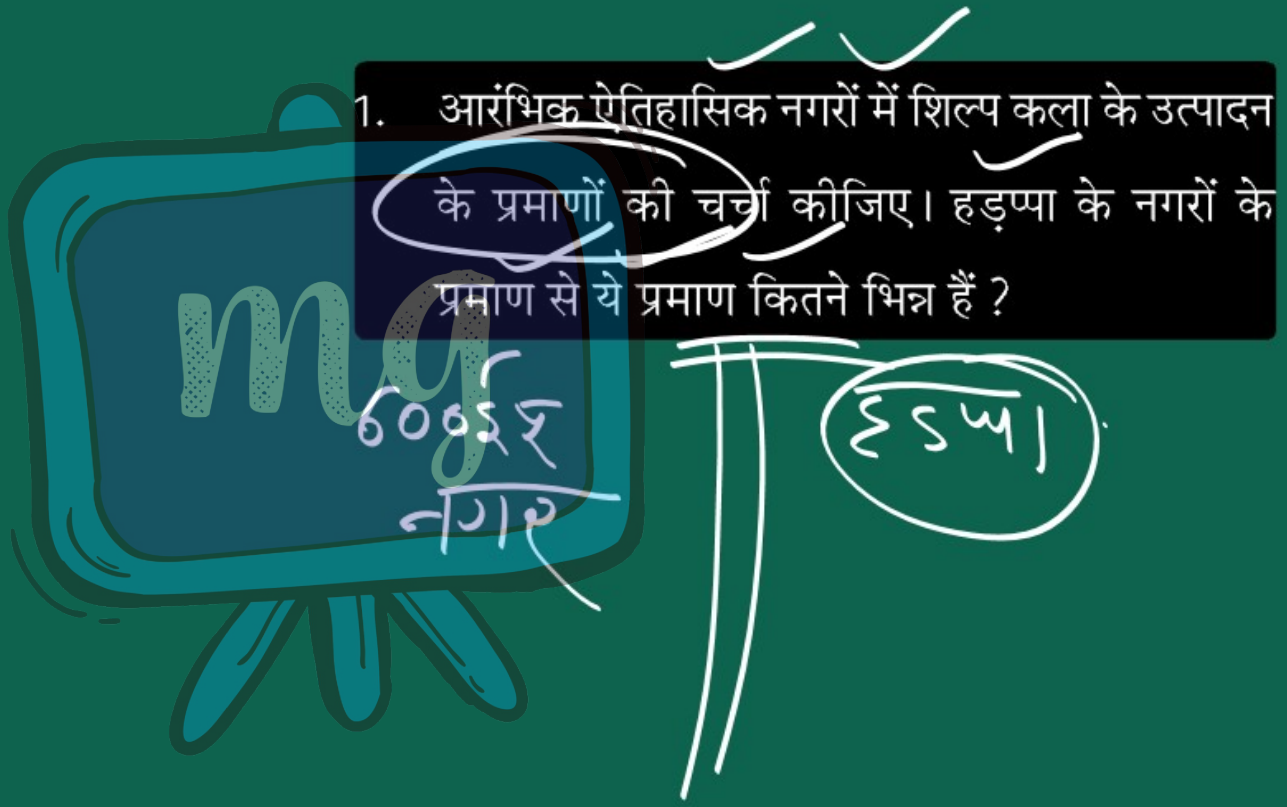

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



उत्तर : आरंभिक ऐतिहासिक नगरों में शिल्प कला के उत्पादन के प्रमाण –

1. आरंभिक ऐतिहासिक नगरों में उत्कृष्ट श्रेणी के मिट्टी के कटोरे व थालियां मिली हैं, जिन पर चमकदार कलई चढ़ी है। इन्हें उत्तरी कृष्ण मार्जित पात्र कहा जाता है इनका प्रयोग धनी लोग करते होंगे।
2. इन नगरों से सोने, चांदी, काँस्य, ताँबे, हाथी दांत, शीशे जैसे तरह तरह के पदार्थों के गहने, उपकरण, हथियार, बर्तन, सीप और पक्की मिट्टी मिली है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

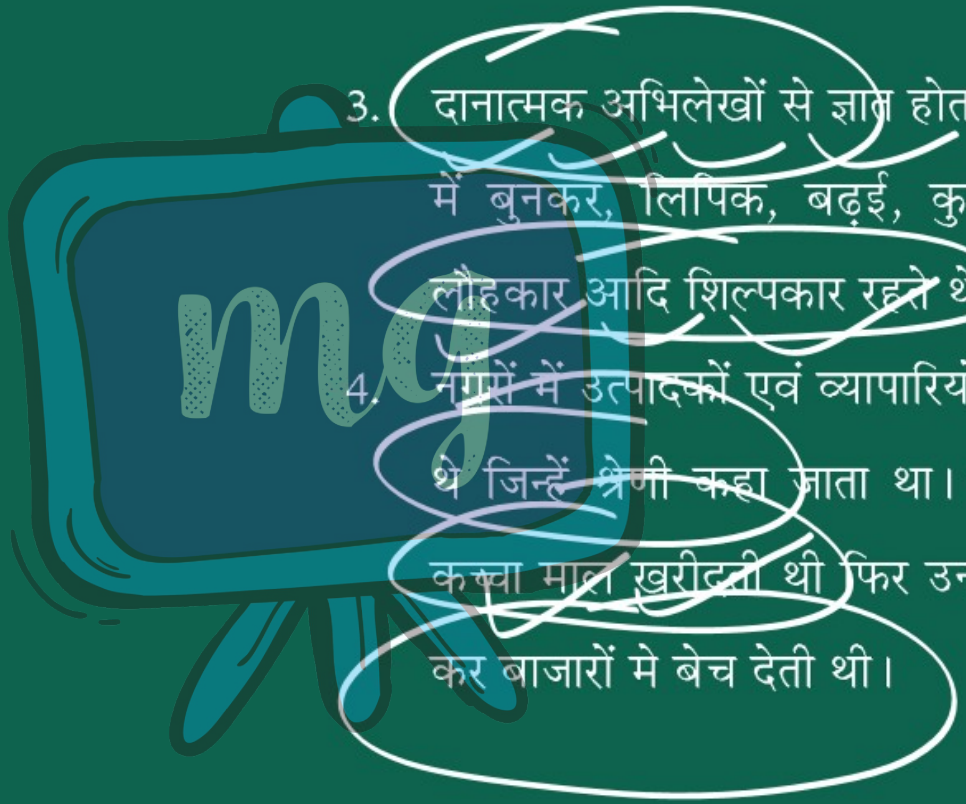

3. दानात्मक अभिलेखों से ज्ञात होता है कि इन नगरों में बुनकर, लिपिक, बढ़ई, कुम्हार, स्वर्णकार, लौहकार आदि शिल्पकार रहते थे।

4. नगरों में उत्पादकों एवं व्यापारियों के संघ बने हुए थे जिन्हें श्रेणी कहा जाता था। ये श्रेणियां पहले कच्चा माल खरीदती थी फिर उनका सामान तैयार कर बाजारों मे बेच देती थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

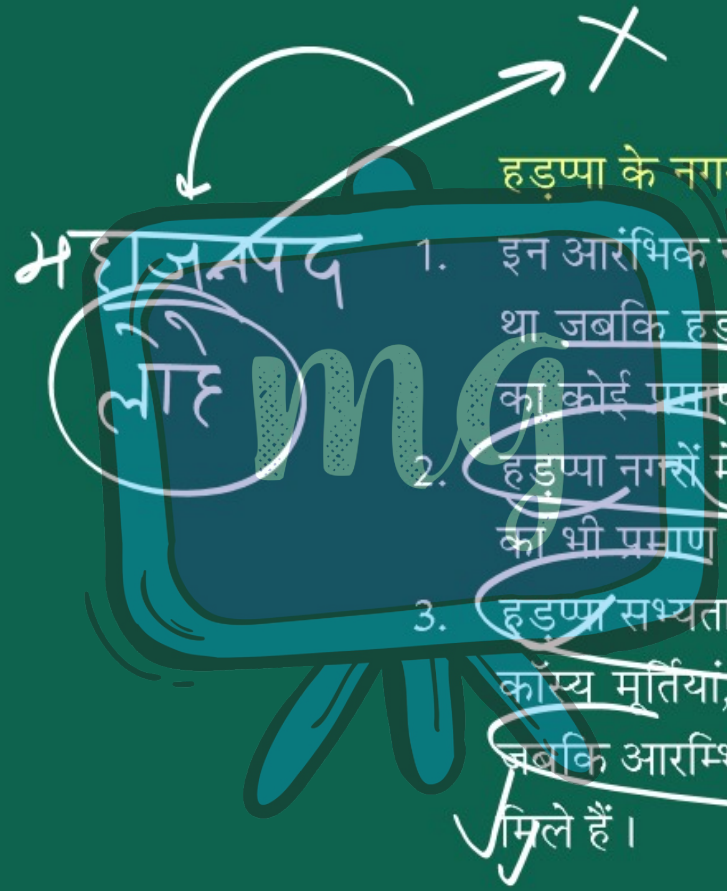

हड़प्पा के नगरों से भिन्नता :-

1. इन आरंभिक नगरों में लौह उपकरणों का प्रयोग होता था जबकि हड़प्पा के नगरों में लौह-धातु के प्रयोग का कोई प्रमाण नहीं मिला है।
2. हड़प्पा नगरों में व्यापारियों के कोई संघ या श्रेणी होने का भी प्रमाण नहीं मिला है।
3. हड़प्पा सभ्यता से मनके बनाने, मातृदेवी की मूर्तियां, काँस्य मूर्तियां, मुहरें बनाने के शिल्प विकसित थे। जबकि आरम्भिक ऐतिहासिक नगरों में ये प्रमाण नहीं मिले हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

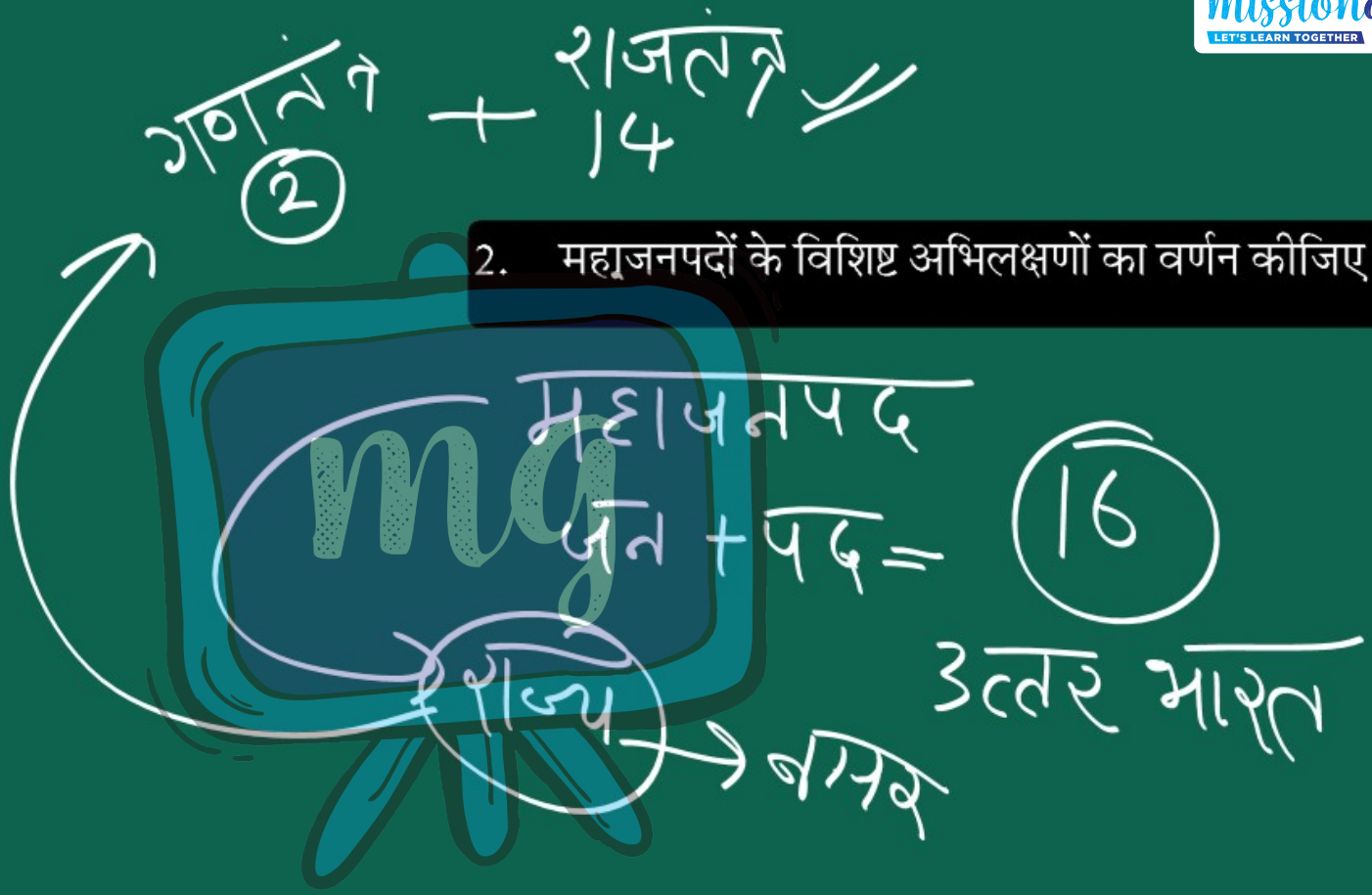

2. महाजनपदों के विशिष्ट अभिलक्षणों का वर्णन कीजिए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

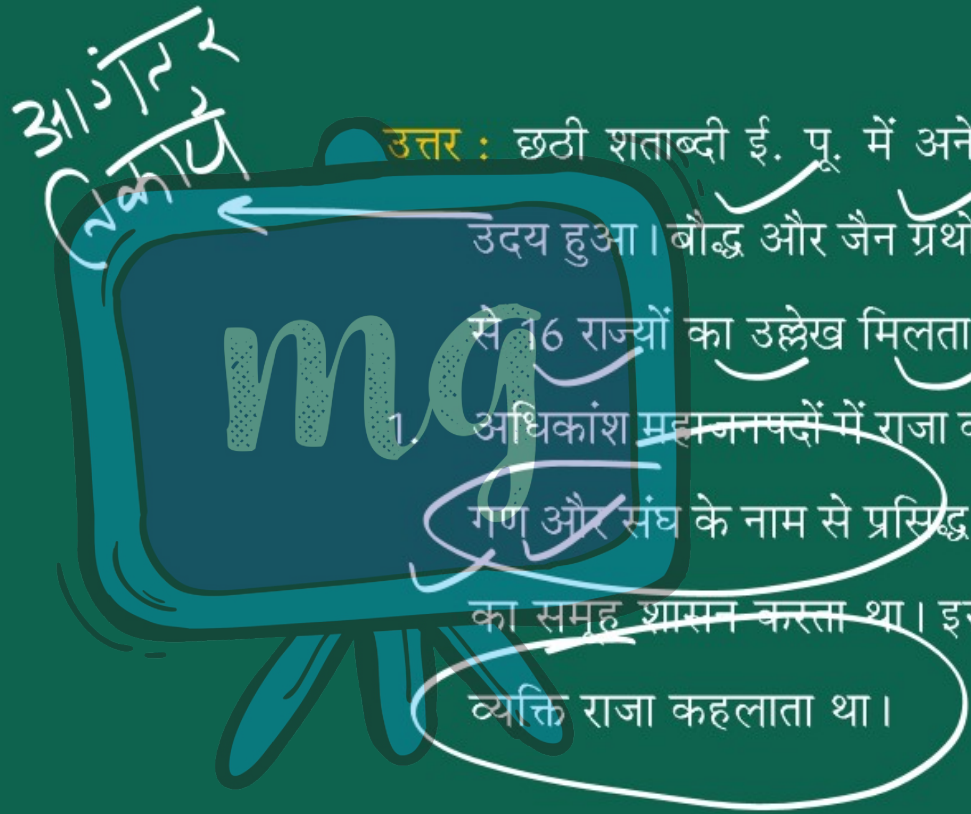

उत्तर : छठी शताब्दी ई. पू. में अनेक महाजनपदों का उदय हुआ। बौद्ध और जैन ग्रंथों में महाजनपद नाम से 16 राज्यों का उल्लेख मिलता है।

1. अधिकांश महाजनपदों में राजा का शासन था जबकि गण और संघ के नाम से प्रसिद्ध राज्यों में कई लोगों का समूह शासन करता था। इस समूह का प्रत्येक व्यक्ति राजा कहलाता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

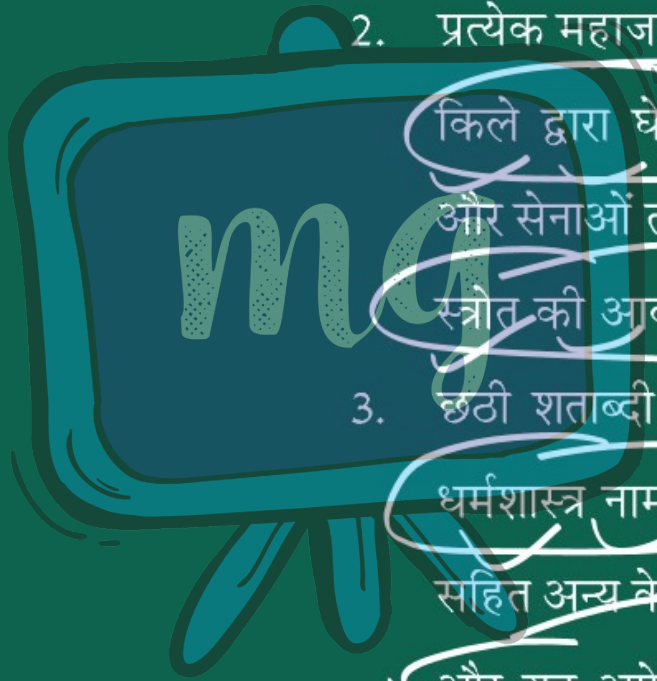

2. प्रत्येक महाजनपद की एक राजधानी होती थी जिसे किले द्वारा घेरा जाता था। किलेबन्द राजधानियों और सेनाओं तथा नौकरशाही के लिए भारी आर्थिक स्त्रोत की आवश्यकता थी।
3. छठी शताब्दी ईसा पूर्व में संस्कृत में ब्राह्मणों ने धर्मशास्त्र नामक ग्रंथों की रचना की इनमें शासक सहित अन्य के लिए नियमों का निर्धारण किया गया और यह अपेक्षा की जाती थी कि शासक क्षत्रिय वर्ग के ही हो।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

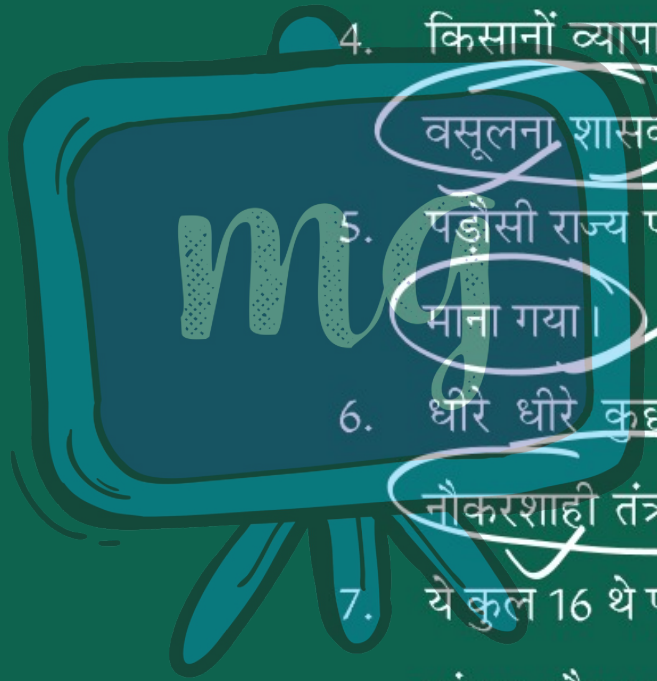

4. किसानों व्यापारियों और शिल्पकारों से कर तथा भेंट वसूलना शासक का अधिकार था।
5. पड़ौसी राज्य पर आक्रमण कर धन वसूलना भी वैद्य माना गया।
6. धीरे धीरे कुछ राज्यों में अपनी स्थाई सेना तथा नौकरशाही तंत्र संगठित कर लिये थे।
7. ये कुल 16 थे पर वज्जि, मगध, कौशल, कुरू, पांचाल, गांधार और अवन्ति प्रमुख थे।
8. इनका काल आरंभिक राज्यों, नगरों, लोहे के बढ़ते प्रयोग तथा सिक्कों के विकास के साथ जोड़ा जाता है।